ऑटिज़्म के बच्चों मे व्यवहार सुधार

बच्चो में बुरे व्यव्हार के लक्षण

१. बच्चे का कहना ना मानना।

२. बच्चे का बिना वजह जिद करना।

३. बच्चे का बिना कारण चिड़चिड़ा होना।

४. बच्चे का अपनी बात मनवाने के लिए तोड़ फोड़ करना ।

५. बिना कारण रोते रहना ।

सबसे पहले सुनिश्चित करे

१. बच्चा भूख के कारण तो नहीं रो रहा।

२. बच्चा प्यासा तो नहीं है ।

३. बच्चा थका हुआ तो नहीं है ।

४. बच्चा बीमार तो नहीं है ।

५. बच्चे को शौच जाने की आवश्यकता तो नहीं है ।

बच्चे के व्यवहार को कैसे बदला जाए

१. बच्चे के साथ प्यार से पेश आए।

२. बच्चे की जिद को नजरअंदाज करे।

३. बच्चा बेवजह रोता है तो उसका ध्यान कहीं और लगाए।

४. बच्चे से आंख से आंख मिला कर बात करे।

५. बच्चा कहना ना माने तो उसको कुछ समय के लिए अकेला छोड दे।

बच्चे को सही तरीके से निर्देश दे

१. जब भी आप बच्चे से बात करे ध्यान रखे उसकी नजर आप पर हो।

२. उसकी समझ के अनुसार भाषा का प्रयोग करे।

३. बच्चे को प्यार से एवम् उसका नाम लेकर पुकारे।

४. बच्चे को बुरे और अच्छे व्यवहार में भेद बताए।

५. बच्चे के अच्छे व्यवहार को बढ़ावा दे और अच्छा व्यवहार करने पे शाबाशी दे।

६. बच्चे के व्यवहार सुधार में आप इनाम भी रख सकते है जैसे उसके पसंद का खाना बना दीजिए।

बच्चे के गलत व्यवहार करने पर अभिभावक की प्रतिक्रिया

१.गलत व्यवहार तुरंत रोके किंतु गुस्से में हाथ ना उठाए।

२.बच्चे से दृढ़ आवाज़ में बोले “नही करना है” ।

३.बच्चा कहना नही मानता है तो आप तुरंत उसके कार्य को रोके।

४. बच्चा जब रूक जाए तो उसको शबाशी दे, और बताए की क्या सही है ।

५.अपने आप को भी शांत रखे, यह अतिआवश्क है।

६. स्वयं को शांत नही रख पा रहे है तो वहा से उठ के चले जाए,और अपना ध्यान किसी और कार्य पर लगाए।

अपना व्यवहार सही रखे

१. बच्चा सबसे अधिक सही और ग़लत व्यवहार अपने आस पास के लोगों से सीखता है।

२. बच्चे के आस पास सदैव अनुशासन बनाए रखे।

३. बच्चे को ना तो मारे, ना गाली गलौज करे, ना ही बच्चे पर जोर से चिल्लाए ।

४. सीधे , छोटे , आसान शब्दो का इस्तेमाल करे।

५. सवाल के रूप में वार्तालाप ना करे।

६. बच्चो की समय सारिणी बनाए , जिससे उनको समय का ज्ञान रहे ।

सामाजिक कौशल की जानकारी देना

१. बच्चो को सामाजिक कौशल की जानकारी देना जैसे धन्यवाद, नमस्ते, बाय - बाय करना सीखाना।
२. अपने दैनिक कार्य में आत्मनिर्भर बनाना।
३. घर के छोटे छोटे कार्य में बच्चे की मदद लेना जिससे उसका आत्मविशवास बढ़ता है।
४. रिश्तेदार एवम् मित्रों के साथ सही व्यव्हार की जानकारी देना।
५. परिवार में एक साथ भोजन करे
६. खेल में बच्चे को अपनी बारी की प्रतीक्षा करना सिखाएं।

आंख से आंख मिला कर बात करे

ब्लॉक का उपयोग सिखाना

हाथ आँख समन्वय अभ्यास

माता-पिता के लिये कुछ विशेष बातें

- ज्यादा देर टी.वी., मोबाईल, आई पैड नहीं दिखाना है (बच्चे में अकेले रहने की और दूसरे से बात नहीं करने की आदत बढती है)
- बच्चे घर पर ज्यादा अच्छी तरह चीजें सीखते हैं इसलिये माता-पिता को थैरेपी अच्छी तरह सीख कर खुद ही करानी चाहिये।
- खेल-खेल में घऱ पर बच्चे की दिनचर्या में यह सब शामिल करें।

माता-पिता के लिये कुछ विशेष बातें

- दूसरे परिवार जिनके ऑटिस्म के बच्चे हैं, उनसे जुड़ना (पैरेंटल सपोर्ट ग्रुप्स)
- जो संस्थायें इनके लिये काम करती है, उनसे जुड़ना
- घर वाले सब एक जुट होकर बच्चे को सम्भालें
- अपने लिये समय निकालें बाहर निकले, सब से मिलें जुलें
- अपनी परेशानी अपने दोस्त या रिश्तेदार से व्यक्त कर सकते हैं, मदद माँगने में शर्मायें नही

माता-पिता के लिये कुछ विशेष बातें

- अपने बच्चे को कभी दूसरे बच्चे से कमजोर न समझे
- अपने बच्चे की क्षमता को पहचाने
- बच्चे को सकारात्मक वातावरण मिले जिससे वो सही बात सीख सके, जो की उसके विकास मे सहायक होगी।
- सब घर के लोग बच्चे के साथ मेहनत करें
- **केवल माँ की जिम्मेदारी नहीं है**
- हर समय बच्चे को थैरेपी में व्यस्त न करें